विजय का तिलक प्राप्त करने के लिए समर्पण भाव से आज्ञा का पालन करो

आज सतगुरुवार भी है तो राखी बन्धन का पावन उत्सव भी है। तो आज वतन की रौनक ही निराली थी जैसे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार की राखियां सज़ी हुई हैं। *(सभी स्थानों से आई हुई बहुत सुन्दर-सुन्दर राखियां ओमशान्ति भवन की स्टेज पर सजाई गई हैं)* लेकिन वतन में तो इससे भी अच्छी चमकती हुई राखियां बापदादा के सामने रखी हुई थी। बाबा बोले, कि वैसे भक्तिमार्ग में तो हरेक का इष्ट और उनके साथ सम्बन्ध अपने-अपने होते हैं। लेकिन आप बच्चों के इस समय एक के साथ ही सर्व सम्बन्ध हैं। तो भिन्न-भिन्न उत्सवों पर, भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से यह संगम के सुहेज आप बच्चे बाप के साथ मनाते हो।

यह राखी उत्सव प्रतिज्ञा का उत्सव है। आप बच्चे कहते हो – बाबा, हम पूरे संगमयुग तक आपकी हर आज्ञा का पालन करेंगे। तो बाबा भी कहते – बच्चे, मैं आप बच्चों की सर्व मनोकामनायें पूर्ण करता हूँ। जो जितना समर्पण भाव से आज्ञा का पालन करते हैं, उनके मस्तक पर अपने आप विजय का तिलक लग जाता है। बाबा तो हर बच्चे को विजयी भव, अमर

भव का वरदान देते हैं लेकिन बच्चे कहाँ तक इस वरदान को अपने जीवन में अपनाते हैं, यह तो हर बच्चे के ऊपर डिपेण्ड करता है।

तो बाबा ने कहा कि यह पवित्र आत्माओं की सभा है। और पवित्र आत्माओं को बाबा बार-बार मुरली द्वारा इशारा देता रहता है कि बच्चे सम्पूर्ण पवित्र भव। केवल ब्रह्मचर्य ही पवित्रता नहीं है लेकिन मन की पवित्रता, वाणी की पवित्रता, जीवन की पवित्रता, संग की पवित्रता यह भी सब पवित्रतायें हैं। और जो इसे जीवन में जितना धारण करता है उतना बड़ा विश्व का महाराजा, महारानी बनता है। इसलिए आपके यादगार देवी-देवताओं को 'कमल-आसन' पर दिखाते हैं और गायन भी करते हैं कमल-नयन, चरण कमल, मुख-कमल.... तो एक एक अंग इतने पवित्र बने हैं तब उनका गायन भक्तिमार्ग में होता है। तो ऐसे गायन और पूजन योग्य आत्माओं को देख बाबा भी खुश होता है और देखता है कि इसमें मेरे विजयी रत्न १०८ की माला में आने वाले कौन-कौन हैं? और बच्चे खुद भी समझते हैं कि मैं विजयमाला में आने लायक हूँ या नहीं ?

फिर बाबा ने कहा – देखो बच्चे, आज वतन में कितनी राखियां आई हैं। आज बच्चों के अन्दर यह संकल्प जाग्रत है कि बाबा के साथ हमारा भाई का भी सम्बन्ध है। और बच्चे अन्दर-ही-अन्दर बाप से प्रतिज्ञा भी करते हैं, हिम्मत भी रखते हैं। तो बाबा बच्चों की हिम्मत देख मदद भी देता है और मुस्कराता भी है। फिर बाबा ने कहा कि सभी बच्चों को कहना कि आपकी सूक्ष्म यादें बाप के पास पहुँचती हैं और जो जितना अमृतवेले लगन से बाप के साथ रूह-रूहान करते हैं तो ऐसे लगन वाले बच्चों को बाबा विशेष रूप से सकाश देते हैं। और बच्चे भी सकाश का अनुभव करते हैं, हल्कापन महसूस करते हैं। तो बाबा ने कहा कि आज के पावन-उत्सव पर सभी बच्चों को मेरा बहुत-बहुत यादप्यार देकर कहना कि बाबा तो बच्चों को श्रेष्ठ आत्मा, महान-आत्मा, पुण्य-आत्मा की नज़र से देखते हैं। तो आप भी अपने आपको ऐसी महान श्रेष्ठ आत्मा समझकर चलेंगे तो आपका यह

संकल्प ही आपकी दृष्टि को, वृत्ति को, बोल को सबको श्रेष्ठ बना देगा।

फिर बाबा को निर्वैर भाई की याद दी कि बाबा आज निर्वैर भाई रशिया सेवा पर जा रहे हैं, आपको बहुत-बहुत याद दी है। तो बाबा मुस्कराये और कहा कि बाबा के मुरब्बी बच्चे जहाँ भी जाते हैं तो न केवल बाप का सन्देश देते हैं लेकिन उनको बाप के साथ का अनुभव भी कराते हैं। तो बच्चा केवल सन्देश देने, सेवा करने नहीं जा रहा है लेकिन बाप की ली हुई पालना का अनुभव कराने के लिए जा रहा है क्योंकि अभी बच्चे चाहते हैं कि बाप की पालना का अनुभव हमको भी हो, तो वह अनुभव कराने के लिए जा रहा है और सफलता तो बच्चों के हर कदम में समाई हुई है। जो जा रहे हैं उनके कदमों में भी और जो आये हैं वह भी सफलता प्राप्त करके आये हैं। फिर मैंने कहा कि बाबा मृत्युजंय भाई, प्रताप भाई विदेश सेवा करके वापस आये हैं तो बाबा ने कहा उन दोनों को भी यादप्यार देना। फिर बाबा ने बहुत-बहुत प्यार हर बच्चे को दिया और ऐसे ही प्यार भरी दृष्टि देते-देते बाबा ने कहा कि– बच्ची, राखी लायी हो? मैने कहा – मैं तो बहुत-सी राखियां लायी हूँ। फिर मैंने बाबा को सारी राखियां दिखलाई और कहा कि बाबा यह सबकी राखियां हैं, यह सब राखियां आपको बांधेगी। तो बाबा बोले – अच्छा, बांधो, कितने दिनों में इतनी राखियां बांधेगी! तो बाबा ने एक राखी मेरे को दी वह बहुत अच्छी और बड़ी राखी थी जिसमें इतनी महीन-महीन किरणें थीं, उन किरणों के ऊपर लिखा हुआ था – फलाने-फलाने की राखी। उस एक राखी में ही जैसे सारी दुनिया की राखी आ गयी। तो मैंने कहा – बाबा, आप बहुत चतुरसुजान हो जो सबकी इच्छा पूरी कर देते हो। फिर बाबा ने दादी के लिए बहुत-बहुत यादप्यार दिया और कहा – बाबा के तरफ़ से वतन की यह राखी जाके बच्ची को पहनाओ। बाबा का बहुत प्यार भरा स्वरूप था। ऐसे प्यार के नयनों से दृष्टि देते-देते बाबा ने मुझे साकार वतन में भेज दिया। ओमशान्ति।